अध्ययन सामग्री
एम० ए० सेमेस्टर 2
CC IX UNIT 3
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज
वी० कुं० सिं० वि०, आरा

17·08·20

उत्तररामचरितम्

'उत्तररामचरितम्' के आधार पर सीता का चरित्र-चित्रण कीजिए।

'उत्तररामचरितम्' नाटक की नायिका सीता आदिशक्ति एवं श्रीराम की आदर्श पतिपरायण साध्वी पत्नी हैं। अष्टावक्र ने आरम्भ में वसिष्ठ के सन्देश के रूप में उनके महत्त्व का प्रतिपादन किया है। वे पृथ्वी की पुत्री, प्रजापति-तुल्य राजर्षि जनक की कन्या तथा श्रीराम की पत्नी हैं —

विश्वम्भरा भगवती भवतीमसूत
राजा प्रजापतिसमो जनकः पिता ते।
तेषां वधूस्त्वमसि नन्दिनि पार्थिवानां
येषां कुलेषु सविता च गुरुर्वयं च ॥

सीता आदर्श सती हैं। उनका शील-सदाचार विश्व-साहित्य में अनूठा है। वह एक आदर्श पत्नी, माता एवं करुणा की साक्षात् मूर्ति हैं। सीता को भवभूति ने अपने नाटक में 'करुणस्य मूर्तिः' अथवा शरीरिणी विरहव्यथा होने पर भी अपने लोकोत्तर तेज से नाटक के प्रत्येक क्षेत्र को आभासित करते हुए दिखाया है।

परिपाण्डु दुर्बल कपोल वाली सुन्दरी सीता करुण रस की मूर्ति अथवा देह धारण करने वाली विरह-व्यथा सी

वन में प्रवेश कर रही हैं —

परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरं दधती विलोलकबरीकमाननम् ।
करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी ॥

तमसा का यह कथन गोदावरी के अगाध जल से निकलकर आती हुई सीता को परिलक्षित करके किया गया है । विरह से पीले और कृश कपोलों से सुन्दर तथा इधर-उधर बिखरे हुए केशों से युक्त मुख को धारण करती हुई जानकी करुण रस की मूर्ति अथवा शरीरिणी विरह-व्यथा के समान वन में आ रही है । यह उत्प्रेक्षा विरहिणी सीता के स्वरूप का साक्षात्कार कराती है ।

सीता राम के प्रति पुर्णतया समर्पित हैं । वे जनस्थान में राम के शोक एवं मुर्च्छा की स्थिति को देखकर उनके द्वारा परित्याग की वेदना को भुल जाती है । अपने हृदय को सीता उनके प्रेम से द्रवीभुत करती है । तमसा ने सीता की इस दशा का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है —

तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशा-
द्वियोगे दीर्घेऽस्मिञ्झटिति घटनास्तम्भितमिव ।
प्रसन्नं सौजन्याद्दयितकरुणैर्गाढ करुणं
द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयस्मिन् क्षण इव ॥

अर्थात् तमसा सीता से कहती हैं — इस समय तुम्हारा हृदय पुनः राम से मिलने की निराशा से उदासीन, अकारण परित्याग करने के क्रोध से कलुषित, इस दीर्घ वियोग में अकस्मात् मिलन हो जाने के कारण स्तब्ध, राम के सौजन्य से प्रसन्न, प्रिय के करुणामय विलापों से अत्यन्त शोकाकुल तथा प्रेम के कारण पिघला हुआ सा हो रहा है ।

नाटक के प्रथम अंक में ही राम सीता की पवित्रता की बात इन शब्दों में स्वीकार करते हैं —

उत्पत्ति परिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः
तीर्थोदकं च वह्निश्च, नान्यतः शुद्धिमर्हतः ॥

अर्थात् सीता जो जन्म से ही पवित्र है। उनकी शुद्धि के लिए दूसरे पदार्थों की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तीर्थों का जल तथा अग्नि स्वतः शुद्ध होने के कारण दूसरे पदार्थों से शुद्धि की अपेक्षा नहीं रखते। अतः सीता को अग्नि से शुद्धि करने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। सीता की पवित्रता के सम्बन्ध में राम एकदम निःशङ्क हैं। अतः वे लोकापवाद को अनुचित मानते हैं। वे कहते हैं कि नैसर्गिक सुरभि वाले कुसुम का सिर पर रहना तो स्वभाव सिद्ध है किन्तु चरणों में प्रतारण तो विरुद्धाचरण ही है। इस प्रकार सीता की पवित्रता पर सन्देह करना विरुद्धाचरण है —

नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि ॥

सीता का चरित्र उनके कार्य व्यापारों से अधिक श्रीराम के मुख से वर्णित हुआ है। श्रीराम का यह निश्चित मत है कि सीता के कारण संसार पवित्र है परन्तु सीता के विषय में लोगों की उक्तियाँ अपवित्र हो रही हैं। सीता जैसी सती साध्वियों से यह संसार सनाथ है किन्तु उन्हीं को लोकापवाद के कारण अनाथ होकर, पति से विश्लिष्ट होकर महान् विपत्ति उठानी पड़ेगी। राम सीता के जन्म रूप अनुग्रह से पृथ्वी को पवित्र करने वाले कहते हैं। स्वयं अग्नि देवता, वसिष्ठ और अरुन्धती ने सीताजी के चरित्र की प्रशंसा की है सीता राम की प्राणवल्लभा और उनसे अभिन्न जीवन वाली हैं।

सीता के चित्र-दर्शन वाले अंक में चित्रवीथी का दर्शन करते हुए निद्रामग्न होने के समय रामचन्द्रजी उन्हें देखते हुए अपने उदात्त प्रेम के उद्गार इस प्रकार व्यक्त करते हैं —

इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयो-
रसावस्याः स्पर्शो वपुषि बहुलश्चन्दन रसः।
अयं बाहुः कण्ठे शिशिर मसृणो मौक्तिक सरः
किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः ॥

अर्थात् यह सीता मेरे घर में लक्ष्मी है, आँखों के लिए अमृत

की शलाका है। इसके स्पर्श से शरीर में चन्दन रस के लेप की-सी शीतलता प्राप्त होती है। इसकी यह भुजलता कण्ठ में शीतल और स्निग्ध मोतियों के हार के समान है। अधिक क्या कहूँ, इसका सभी कुछ मुझे अत्यन्त प्रिय है, परन्तु इसका विरह सर्वथा असह्य है।

सीता एक आदर्श पत्नी होने के साथ-साथ आदर्श माता भी हैं। उनका हृदय वात्सल्य रस से ओत-प्रोत है। वह अपने हृदय की बात को उचित एवं प्रभावशाली शब्दों के द्वारा प्रकट करने में समर्थ है। वाकपटुता के कारण रावण भी पराजित सा हो जाता है। वाक्-चातुर्य के कारण ही सीता अपने सम्पूर्ण परिवार के हृदय में स्थान बना लेती है। सीता का चरित्र 'उत्तररामचरितम्' में अत्यन्त कलात्मक बन पड़ा है। भवभूति ने सीता का मनो-वैज्ञानिक चित्रण करने के लिए उन्हें छाया रूप में प्रस्तुत किया है। राम के पश्चात्तापपूर्ण करुण विलाप से सीता का आक्रोश प्रेम, श्रद्धा और विश्वास में परिवर्तित हो जाता है। सीता का चरित्र अत्यन्त उदात्त एवं मनोवैज्ञानिक रूप में चित्रित हुआ है।